https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

रयूमैटिक बुखार एवं स्ट्रेप्टोकोकल रिएक्टिव गठिया

के संस्करण 2016

दैनिक दिनचर्या

रोजमर्रा की जिंदगी कैसी होगी?

कार्डीटाइटिस व कोरिया के मरीजों को परिवार का सहयोग मिलना चाहिये। मुख्य लक्षण कम होने पर यदि हृदय में क्षति नहीं है तो रोजमर्रा के कामकाज पर प्रभाव नही पड़ता। मुख्य चिंता का विषय एंटीबायोटिक दवाओं की रोकथाम के साथ लम्बी अवधि के अनुपालन का है। प्रथमिक देखभाल सेवाओं को शामिल किया जाना चाहिए और शिक्षा के लिये विशेष रूप से किशोरों के लिये, उपचार के साथ अनुपालन में सुधार करने की जरूरत है।

क्या यह बच्चे स्कूल जा सकते है?

यदि समय-समय पर परामर्श से हृदय की गती सामान्य पाई जाती है तो यह बच्चें सामान्य बच्चों की तरह स्कूल एवं उनकी दैनिक गतिविधियां कर सकते है। बच्चें को सामान्य गतिविधियां करने में पालक एवं शिक्षकों का पूर्ण सहयोग होना चाहिएं जिससे बच्चे की पढ़ाई में सफलता बनी रहे और वह अपने समवयस्कों मे घुलमिलकर रहे। रयूमैटिक कोरिया के संचलन के चलते स्कूली पढ़ाई में कुछ दिनों की रूकावट आना अनिवार्य है और शिक्षक एवं पालक को 1 से 6 माह तक इसमें सहयोग करना आवश्यक है।

खेलक्रीडा सम्भव है?

बच्चो की सामान्य दिनचर्या में खेलक्रींडा का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। बीमारी के ईलाज का एक महत्वपूर्ण अंग यह भी है कि बच्चें को सामान्य दिनचर्या उपलब्ध कराई जाये, जिससे वह अपने समवयस्कों से अलग ना हो। बच्चे की क्षमता अनुसार वह खेलक्रींडा मे भाग ले सकता है। केवल बीमारी के तीव्र लक्षणों के समय बच्चें को सम्पूर्ण आराम एवं प्रतिबंधित शारीरीक गतिविधि करना आवश्यक है।

खानपान कैसा होना चाहिये?

खानापान से इस बीमारी पर प्रभाव का कोई प्रमाण नहीं है। बच्चों को अन्य सामान्य बच्चों की तरह पूर्ण पोषति आहार मलिना चाहयि। बढ़ती उम्र वाले बच्चों को आहार में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, कैलश्यमि और वटिामीन मलिना चाहयि। कोर्टजिोन लेने वाले बच्चों को भूख अधकि लगती है कनि्तु इन्हे अधकि खाने से दूर रहना चाहयि।

मोसम का इस बीमारी पर क्या असर होता है?

मोसम का इस बीमारी पर प्रभाव होने को कोई अनुमान नही है

क्या टीकाकरण कयिा जा सकता है?

हर बच्चें के जरूरत अनुसार वशिेषज्ञ टीकाकरण समय सारणी तय कर सकते है। टीकाकरण का इस बीमारी पर कोई सीधा प्रभाव नही पड़ता। प्रतरिक्षण प्रणालर्ी को दबाने वाली दवाई लेने वाले बच्चों को वह टीके जो जीवति बैक्टीरयिा/वायरस से बने है उनसे वंचति रखना जरूरी है, क्योंकर्ि ऐसे बच्चों कों तीव्र स्वरूप के इन्फैक्शन होने की सम्भावना होती है। इन बच्चों में मृत बैक्टीरयिा/वायरस से बने टीके लगाना सुरक्षीत माना जाता है।
ऐसे बच्चे जनिका प्रतरिक्षण प्रणाली पर दबाव वाली दवाईयों से ईलाज चल रहा हो, वशिेषज्ञ को इनका टीकाकरण के पश्चात उससे संबंधीत एंटीबॉडी की मात्रा को नापने वाली जांच कराने की सलाह देनी चाहयि।

यौन जीवन, गर्भधारण और जन्म नयिंत्रण में कोई समस्या?

इस बीमारी का यौन जीवन और गर्भधारण पर कोई सीधा प्रभाव नही पड़ता। फरि भी बीमारी के ईलाज में ली जाने वाली दवाईयों का गर्भस्थ शशिु पर असर होने कर्ी सम्भावना का वशिेष ध्यान रखना चाहएिं। जन्म नयिंत्रण एवं गर्भधारण की सम्पूर्ण जानकारी अपने वशिेषज्ञ से प्राप्त करनी चाहयिं।